INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

धार्मिक आन्दोलन में जनजातियों का योगदान – एक पुनरालोकन

1. डॉ. गुंजा साहू, अतिथि व्याख्याता भूगोल, शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सारंगढ़ (छ.ग.)
2. डॉ. हरिशंकर साहू, अतिथि व्याख्याता भूगोल, शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सारंगढ़ (छ.ग.)
3. यज्ञवल, आचार्य सरस्वती शिशु मंदिर राजिम, (गरियाबंद)
4. शिव लाल, जनभगीदारी अतिथि व्याख्याता राजनीति शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सारंगढ़ (छ.ग.)

Abstract: भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक विविधताएँ है यहां अनेक धर्म, मत, प्रजाति, जाति एवं जनजाति के लोग रहते हैं। यहां की सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 80.8% भाग आदिम जातियों या जनजातियों द्वारा निर्मित है। अधिकतर जनजातियाँ ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करते हैं जहाँ सभ्यता का प्रकाश नहीं पहुंचा है। आज भी अनेक जनजातियाँ आदिम स्तर पर ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है। जबकि दुनियाँ के अधिकांश देश प्रगति के पथ पर है। जनजातियों को आदिम समाज,आदिवासी, वन्य जाति. गिरिजन एवं अनुसूचित जनजाति आदि नामों से पुकारा जाता है। जनजातियों की अपने देश में विशिष्ट पहचान, संस्कृति व सामाजिक व्यवस्था है। परंतु विकास की मुख्य धारा से कटे होने के कारण से अल्पविकसित रह गये हैं। आज भी पाश्चात्य देशों अफ्रीका एवं अन्य देशों में उनके विकास की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया एवं जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति शोचनीय है। जनजातियों में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका सम्पूर्ण जीवन चक्र धर्म पर ही आधारित होता है। एल्विन के अनुसार ''भारत की प्रायः सभी जनजातियाँ हिन्दू धर्म को मानती है।''

Keywords– धार्मिक, जनजाति, सभ्यता, संस्कृति ,गिरिजन, अल्पविकसित, आदिवासी।

प्रस्तावना

भारत के समस्त प्रदेशों में आदिवासी निवास करते हैं। आदिवासी से अभिप्राय देश की प्राचीनतम निवासियों से है. जो कि उन्नति के पथ की ओर अग्रसर नहीं हो पाये और देश की मुख्य धारा से कट गये एवं कालान्तर में पिछड़ते ही गये। इन्हें अलग–अलग देशों में अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। इन आदिवासियों की संस्कृति से हमे उस देश की मूल प्राचीन साँस्कृतिक धरोहर के दर्शन होते हैं।[1]

भारत विभिन्न धर्मो की जन्मभूमि है। हिन्दू, बौध्द, जैन एवं सिक्ख धर्मों का उदय भारत में हुआ तथा इस्लाम एवं ईसाई धर्म विदेशों से यहाँ आये। प्रत्येक धर्म में कई मत मतांतर एवं संप्रदाय पाये जाते है और उनके नियमों एवं मान्यताओं में अनेक विविधताऐं है। धार्मिक समुदायों एवं मान्यताओं में भी अनेक विविधताए देखा जा सकता है– उदाहरणार्थ– पारसी लोग मदिरा का व्यापार करते हैं, मोपला व्यापारी प्रायः केरल, मैसूर और मुंबई में ही है। लेकिन आज सम्पूर्ण भारत में विभिन्न समुदाय के लोगों के फैलाव और उनके द्वारा अपनाएँ गये विविध आर्थिक कार्यो के कारण सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया को बल मिला है। धर्म ने भारत को सदियों से एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया है।[2]

जनसंख्या की दृष्टि से भारत के प्रान्तों में असमानता पायी जाती है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में इनकी जनसंख्या सभी प्रान्तों से अधिक है। इनके बाद महाराष्ट्र, उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा कर्नाटक राज्य आते हैं। उत्तर प्रदेश, केरल एवं तमिलनाडु में इनकी संख्या कम है। देश के तीन राज्यों– मिजोरम, नागालैंड एवं मेघालय की कुल जनसंख्या का 75 से 90 प्रतिशत तक का भाग अनुसूचित जनजातियो की है। जनजातिय जीवन में धर्म का बहुत अधिक महत्व है। अतः प्रत्येक जनजातीय परिवार एक विशेष धर्म में विश्वास करता है और धर्म से संबंधित आचरण और आदर्शों को ही अपने बच्चों को ही सिखाता है। परिवार में धार्मिक सँस्कारों के बीज बालक में पड़ जाते हैं उनसे उसका सम्पूर्ण जीवन प्रभावित होता है। लेकिन गैर जनजातीय

इसाई संस्कृति और धर्म का प्रभाव पड़ने के कारण अन्य धर्म को अपना रहे हैं फिर भी परंपरागत रूप में धर्म का महत्व है।[3]

मसीही आन्दोलन एवं जनजातियों का योगदान

इसाई धर्म के प्रभाव एवं राजनीतिक जागृति के कारण यहाँ की जनजातियों में राजनीतिक स्वायतता एवं नागाक्लब, नागा नेशनल कौंसिल, नागा यूथ मूवमेण्ट तथा नागा वूमन सोसाइटी द्वारा किया गया। भारतीय आदिवासी आन्दोलन में एक प्रमुख श्रेणी उन तमाम आंदोलनों की मानी जाती है। जिन्हे मसीही आन्दोलन कहा गया है। ईसाई मिशनरियों की भेदभाव नीति तथा हिन्दू सम्पर्को के साँस्कृतिक प्रभावों ने उसके अपने परंपराओं, अपने दैवीय भावना के प्रति हीनता की भावना को जन्म दिया तथा उनकी एकता को अविछिन्न किया।[4]

बिरसा मुण्डा का धार्मिक आन्दोलन

15 नवंबर 1875 ई. में झारखण्ड के उलगुला नामक गांव का निवासी बिरसा नामक एक मुण्डा इस अभाव की शर्त करने में सफल हुआ उसने लुथेरियन मिशन में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी और लगभग 20 वर्ष का नवयुवक था। मिशन में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह कुछ समय एक हिन्दू साधु के सम्पर्क में शिक्षा प्राप्त करने के रहा तथा कुछ समय तक वह वैष्णव रहा। उसने यह अफवाह फैला दिया– उसे ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त हो चुकी है और 'ईसा–मसीह' की भाँति भगवान ने उसे मुण्डा जाति के उद्धार के लिए नियुक्त किया है। इस प्रकार बिरसा की अलौकिक शक्ति एवं प्रतिभा का प्रसार होने लगा। शीघ्र ही काफी संख्या में लोग उसके अनुयायी हो गये। बिरसा पहाड़ी उसकी गतिविधियों का केंद्र रहा। 1895 ई. में वह क्रांति के लिए संगठन एकत्र कर क्रांति के लिए अग्रसर होगये। जमींदारो एवं साहूकारों की सहायता से बिरसा बन्दी बना लिया गया तथा ढाई वर्षों का कठोर दण्ड देकर राँची जेल भेज दिया गया। 1897 में जेल से बिरसा को रिहा कर दिया गया तथा 1900ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।[5]

साम्राज्यवादी शक्तियो के द्वारा एक विद्रोह को रौंद दिया और अब उस भूमि पर से कोई दूसरा विद्रोह उत्पन्न नही होगा पर ऐसा नहीं हुआ डॉ.सुधीर सक्सेना के अनुसार– ''जो तथ्य बस्तर विद्रोह के संबंध में खोजे हैं वे महत्वपूर्ण है। उनकी शब्दों में सन् 1777 से 1977 ई. यानी दो शताब्दियो तक के अन्तराल में बस्तर में कम से कम 10 बार विद्रोह भड़का। प्रारंभिक विद्रोहों व उनके दमन में अंततः 1910 में बस्तर में ऐसे व्यापक और रक्तिम विद्रोह को जन्म दिया जो भूमकाल– गीत, वाचिक–परंपरा, ब्रितानी दस्तावेजों के साथ–साथ आदिवासियों की स्मृति में आज भी जीवित है।'' उपर्युक्त उद्धरण इस तथ्य को उजागर करता है कि लोग अंग्रेजी शासकों से इतने अधिक त्रस्त थे कि अंततः बिखरे हुए जनजातियों के लोगों ने इनके विरूद्ध हथियार उठा लिया।[6]

ताना भगत आन्दोलन

प्राचीन काल से ही हिन्दू समाज के सम्पर्क में रहने के कारण आदिवासियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव पड़ते रहे हैं। किन्तु 20 सदी में इनमें अनेक धार्मिक विचारों का प्रसार हुआ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है– भक्त आन्दोलन। कहा जाता कि चैतन्य महाप्रभु जब बंगाल से उड़ीसा जा रहे थे उसी समय रांची जिला के पंच परगना में वैष्णव विचारों का प्रसार हुआ। विशेष रूप से उराँव लोगों ने विभिन्न हिन्दू–देवी देवताओं की पूजा अर्चना शुरू कर दी।[7] जिससे उनकी सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिकअवस्थाओं में सुधार हो सके। हिन्दू धर्म, इसाई धर्म, अंग्रेजी शिक्षा द्वारा जनजातियों में एक स्तर तक चेतना उत्पन्न हुई, जिनके कारण सामाजिक आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला।[8]

निष्कर्ष

धार्मिक प्रभावों के दृष्टिकोण से जनजातियों पर इसाई एवं हिन्दू धर्म के प्रभावो ने ही अधिकांश समस्याओं को जन्म दिया। ब्रिटिश प्रशासन के नियंत्रण में आने के उपरान्त इसाई मिशनरियों को धर्म प्रचार के कार्यो में राजनैतिक प्रश्रय प्राप्त होने लगा। मिशनरियों ने जनजातियों में अपने धर्म प्रचार के कार्य को अधिक सुविधाजनक समझा तथा धर्म परिवर्तन कार्य में सुविधा प्राप्त हुई। आदिवासियों के परंपरागत देवी–देवताओं, उनके विश्वासों एवं धार्मिक

व्यवहारों की अवहेलना की। ये कार्य जनजातियों के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ जिसका परिणाम हमें जनजातियों में धार्मिक आंदोलन के रूप में दृष्टिगत होता है।[9]

संदर्भ सूची –

1. मेंहता, प्रकाशचंद – भारत के आदिवासी, शिवा पब्लिशर्स उदयपुर 1993, पृष्ठ 01,
2. वही, पृष्ठ 02,
3. डॉ उमेश कुमार – आदिवासी महिलाओं का शैक्षणिक एवं सामाजिक और आर्थिक अध्ययन, क्लासिकल पब्लिशिंग दिल्ली, 2007, पृष्ठ–69
4. मिश्र उमाशंकर एवं तिवारी प्रभात कुमार – भारतीय आदिवासी, हिंदी ग्रंथ अकादमी उत्तरप्रदेश, लखनऊ 1975, पृष्ठ 161,
5. वही – पृष्ठ 171–172
6. वी. एम सिंह जनमेजय – भारत में सामाजिक आंदोलन, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर 2005, पृष्ठ 154,
7. शर्मा, संदीप – छोटा नागपुर क्षेत्र में झारखण्ड आंदोलन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, गुरु घासीदास वि० वि० बिलासपुर 1997, पृष्ठ 74,
8. शर्मा, के.एल.– भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 2006, पृष्ठ 175,
9. शुक्ल, हीरालाल –आदिवासी सामन्तवाद, ज्ञान पब्लिशिंग दिल्ली 1987 पृष्ठ 125।

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.